Lecture No - 12

B.A Degree 1 One Economics Honurse
Paper - 1

Dr. R. N. Tiwari
Deptt of Economics
A.N.D. College Shahpur, Patory

Page No.
Date: 27/1/2022

Name of Topic - "अर्थशास्त्र की प्रकृति एवं क्षेत्र"
(The Nature and scope of Economics)

अर्थशास्त्र की परिभाषा के अध्ययन के उपरान्त इसके क्षेत्र के संबंध में भी विचार करना आवश्यक हो गया है। अर्थशास्त्र का क्षेत्र आज के समय में अत्यन्त आवश्यक हो गया है। इसकी जानकारी के लिए सामान्यतया निम्नलिखित तीन बातों पर विचार करना आवश्यक है;

(I) अर्थशास्त्र की विषय सामग्री (Subject matter of Economics) क्या है।

(II) अर्थशास्त्र की प्रकृति (Nature of Economics) क्या है, यानि अर्थशास्त्र कला है अथवा विज्ञान या दोनों है? तथा

(III) अर्थशास्त्र वास्तविक विज्ञान है अथवा नीतिशास्त्र या आदर्शवादी विज्ञान भी है।

(I) अर्थशास्त्र की विषय सामग्री (Subject Matter of Economics)

किसी भी शास्त्र के अन्तर्गत अध्ययन किया जानेवाले विषय का उल्लेख उसकी परिभाषा में ही पाया जाता है। अतः अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का अन्दाजा भी इसकी परिभाषा से ही लग सकता है किन्तु जैसा कि अर्थशास्त्र की विभिन्न परिभाषाएँ दी गयी है; अतएव विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा दी गयी परिभाषाओं में अन्तर के कारण अर्थशास्त्र की विषय सामग्री के में भी अन्तर पाया जाता है।

प्रारंभ में आदम स्मिथ तथा अन्य प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों (Classical School of Economics) ने अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान बतलाया है (Economics is the Science of Weath) जैसा कि आदम स्मिथ की पुस्तक के नाम से भी स्पष्ट है, ~~इस संबंध~~ इन प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों के अनुसार अर्थशास्त्र के अंतर्गत धन की ~~प्रकृति~~ प्रकृति

एवं इसकी प्राप्ति के कारणों का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में आदम स्मिथ के अनुसार अर्थशास्त्र की विषय सामग्री का संबंध ~~अध्ययन~~ धन की प्रकृति संबंधी प्रतिष्ठित विचारधारा सीनियर (Nassau Senior) के निम्नलिखित कथन से भी स्पष्ट हो जाती है। राजनीतिक अर्थशास्त्र का अध्ययन का विषय सुख नहीं वरन् धन है। उसकी मान्यताएँ कुछ सामान्य युक्तियों से बनती है जो निरीक्षण अथवा ज्ञान के परिणाम होते हैं तथा जिनके लिए किसी प्रमाण अथवा औपचारिक कथन की आवश्यकता नहीं होती और इसके निष्कर्ष उतने सामान्य होते हैं तथा यदि उनके तर्क ठीक हो तो उतना निश्चित है जितना की उनकी मान्यताएँ।

आगे चलकर मार्शल तथा उनके अनुयायियों ने अर्थशास्त्र को भौतिक कल्याण का शास्त्र बतलाया। मार्शल के समय तक प्रतिष्ठित विचारधारा की पर्याप्त आलोचना हो चुकी है। इन आलोचनाओं एवं आर्थिक जीवन में हुए इन परिवर्तनों से वह बहुत प्रभावित हुआ। इसलिए उसने प्रतिष्ठित विचारधारा में मौलिक परिवर्तन किया। मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र उन सभी मानवीय क्रियाओं का अध्ययन करता है जिनका संबंध धन से हो तथा जिन्हें प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा रूपी मापदंड से ~~सम्~~ सम्बन्धित किया जा सके। दूसरे शब्दों में मार्शल के अनुसार, सामाजिक, वास्तविक एवं सामान्य मनुष्यों की आर्थिक ~~अध्ययन~~ क्रियाओं का अध्ययन ही अर्थशास्त्र की विषय सामग्री है।

किन्तु ठीक इसके विपरीत रॉबिन्स (Robbins) ने अर्थशास्त्र के क्षेत्र को अत्यधिक व्यापक बना दिया मार्शल तथा अन्य कल्याणवादी अर्थशास्त्रियों की परिभाषा की आलोचना ~~के क्षेत्र~~ करते हुए प्रो० रॉबिन्स अर्थशास्त्र

Page No.
Date

से अभाव अथवा स्वल्पता का विज्ञान (Economics is the science of scarcity) मानते हैं। रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र में उन मानवीय आचरणों (Human behaviour) का अध्ययन किया जाता है। जिनका अध्ययन असीमित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वैकल्पिक प्रयोगवाले सीमित साधनों से है। दूसरे तरह से, अर्थशास्त्र मानव एवं उनके आचरण का शास्त्र है चाहे उनका संबंध भौतिक या अभौतिक या आर्थिक अथवा गैर आर्थिक किसी से भी क्यों न हो। वास्तव में, रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र के अन्तर्गत हम मानव आचरण के केवल एक पहलू आर्थिक पहलू, चुनाव का पहलू या निर्णयात्मक पहलू का ही अध्ययन करते हैं मार्शल की तरह रॉबिन्स भी इस बात को मानते हैं कि अर्थशास्त्र प्रमुखतः मानव का अध्ययन (Economics is Primarily a Study of man) तथा वैकल्पिक प्रयोग वाले सीमित साधनों का स्थान इसके बाद ही आता है, किन्तु रॉबिन्स यह नहीं मानता कि अर्थशास्त्र में हम मानव की केवल ~~उन~~ क्रियाओं जिन्हें मार्शल ने आर्थिक क्रियाएँ कहा है का अध्ययन करते हैं। रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र में हम मानव आचरण के केवल आर्थिक ~~पहलू~~ पहलू का ही अध्ययन करते हैं यह वह पहलू है जिसका संबंध वैकल्पिक प्रयोगवाले सीमित साधनों और उसकी अत्यन्त अनंत आवश्यकताओं की पूर्ति से है। इस लिए प्रो० रॉबिन्स का कहना है कि अर्थशास्त्र चुनाव अथवा मूल्यांकन का शास्त्र है।

इस प्रकार हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अर्थशास्त्र की परिभाषा की ही तरह इसकी विषय सामग्री के संबंध में भी अर्थशास्त्रियों में एकता नहीं हो सकती

Page No.
Date 11/6/2021

जिससे किससे इस संबंध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचना बड़ा ही कठिन कार्य है। फिर भी उपयोगवादी अर्थशास्त्री इतना अवश्य मानते हैं कि अर्थशास्त्र मुख्यतः मनुष्य का अध्ययन है। (the starting point and the goal of the study of Economics is man) किन्तु मार्शल तथा अन्य कल्याणकारी अर्थशास्त्री अर्थशास्त्र को एक सामाजिक विज्ञान (Social science) मानते थे, यानि इसके अनुसार अर्थशास्त्र में मनुष्य का अध्ययन समाज के एक सदस्य के रूप में ही किया जाता है। इसके विपरीत रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र एक मानवीय विज्ञान (human science) है। रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र के अन्तर्गत केवल सामाजिक मनुष्य का ही अध्ययन नहीं किया जाता वरन् रॉबिन्सन क्रूसो तथा साधु-संन्यासी जैसे एकांतवासियों का अध्ययन भी किया जाता है, किन्तु यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो मानव की व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्रियाओं (Individual and social actions) में अन्तर करना ही कठिन कार्य है अतएव अर्थशास्त्र को एक सामाजिक विज्ञान मानना ही व्यावहारिक अधिक उचित होगा।

Lectur No 12

Dr. R. N. Tiwari
Deptt of Economics.
S. N. D. College Shahpur Patory
B.A. Degree 1 Economics Honours.
Paper - I (one)
Dated - ~~13/11/2021~~
27/11/2022